Toppersnotes
Unleash the topper in you

# UGC-NET

# राजनीति विज्ञान

**National Testing Agency (NTA)**

**पेपर 2 || भाग – 2**

SIERRA INNOVATIONS

# विषय सूची


| क्र.सं. | अध्याय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| | **इकाई - III - भारतीय राजनीतिक विचारक** | |
| 1. | धर्मशास्त्र | 1 |
| 2. | एम. एन. राय | 4 |
| 3. | रवीन्द्रनाथ टैगोर | 7 |
| 4. | बाल गंगाधर तिलक | 13 |
| 5. | जयप्रकाश नारायण (जे.पी.) | 20 |
| 6. | दीनदयाल उपाध्याय | 22 |
| 7. | कौटिल्य (चाणक्य/विष्णुगुप्त) (लगभग 300 ईसा पूर्व) | 24 |
| 8. | अरविन्द घोष (1872-1950) | 27 |
| 9. | महात्मा गांधी (1869-1948) | 28 |
| 10. | भीमराव अम्बेडकर (1891-1956) | 33 |
| 11. | जवाहर लाल नेहरू (1889-1964) | 36 |
| 12. | राम मनोहर लोहिया (1910-1967) | 38 |
| 13. | मोहम्मद इकबाल | 41 |
| 14. | पेरियार | 43 |
| 15. | स्वामी विवेकानंद | 46 |
| 16. | कबीर | 52 |
| 17. | रमाबाई | 53 |
| 18. | अग्गन्नासुत्त | 54 |
| 19. | जियाउद्दीन बरनी | 56 |
| 20. | वीर सावरकर | 58 |
| | **इकाई - IV - तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण** | |
| 1. | तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागम | 60 |
| 2. | राजविज्ञान में व्यवस्था सिद्धांत का विकास | 65 |
| 3. | डेविड ईस्टन का व्यवस्था सिद्धांत | 66 |
| 4. | प्रकार्यवाद उपागम | 70 |
| 5. | संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम | 71 |
| 6. | राजव्यवस्थाओं का वर्गीकरण | 74 |
| 7. | राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागम | 75 |
| 8. | कल्याणकारी राज्य (Welfare State) | 83 |
| 9. | सरकार के प्रकार | 87 |
| 10. | लोकतंत्र (Democracy) का अर्थ | 98 |
| 11. | अधिनायकतंत्र (Dictatorship) | 107 |
| 12. | प्रतिनिधित्व का अर्थ | 110 |

| | | |
|---|---|---|
| 13. | संविधान व संविधानवाद | 115 |
| 14. | संविधानवाद (Constitutionalism) | 117 |
| 15. | शक्ति संतुलन | 118 |
| 16. | अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धांत | 121 |
| 17. | परम्परावाद बनाम विज्ञानवाद (व्यवहारवाद) | 126 |
| 18. | उदारवाद बनाम मार्क्सवाद | 132 |
| 19. | प्रत्यक्षवाद बनाम नव-प्रत्यक्षवाद | 136 |
| 20. | दबाव समूह / हित समूह / उत्प्रेरक गुट | 136 |
| 21. | राजनीतिक विकास | 142 |
| 22. | उपनिवेशवाद | 154 |
| 23. | वि-औपनिवेशीकरण | 155 |
| **इकाई - V - अन्तर्राष्ट्रीय संबंध** | | |
| 1. | अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति | 156 |
| 2. | परम्परावाद v/s विज्ञानवाद उपागम (Traditional vs Scientific Approaches) | 161 |
| 3. | उदारवाद v/s मार्क्सवाद व नव-मार्क्सवाद (Liberalism vs Marxism and Neo-Marxism) | 167 |
| 4. | रचनावाद (Constructivism Theory) | 175 |
| 5. | राष्ट्रीय शक्ति (National Power) | 177 |
| 6. | राष्ट्रीय हित (National Interest) | 180 |
| 7. | शक्ति - संतुलन व सामूहिक सुरक्षा (Balance of Power and Collective Security) | 181 |
| 8. | शस्त्र प्रतिस्पर्धा, शस्त्र नियंत्रण व निःशस्त्रीकरण (Arms Race, Arms Control and Disarmament) | 183 |
| 9. | युद्ध : प्रकृति, कारण व प्रकार (War: Nature, Causes and Types) | 189 |
| 10. | बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism) | 192 |
| 11. | पहचान की राजनीति (Identity Politics) | 196 |
| 12. | अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रवाद (Regionalism in International Politics) | 199 |
| 13. | हरित राजनीति (Green Politics) | 200 |
| 14. | इतिहास का अंत (End of History) | 203 |
| 15. | संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) (United Nations Organization) | 205 |
| 16. | आसियान (ASEAN) | 214 |
| 17. | ब्रिक्स (BRICS) | 219 |
| 18. | G-20 | 220 |
| 19. | वैश्विक शासन, ब्रेटनवुड्स व्यवस्था व W.T.O. | 221 |
| 20. | W.T.O. व GATT में संबंध | 224 |

# III UNIT

# भारतीय राजनीतिक विचारक

## धर्मशास्त्र

- **धर्म** शब्द की उत्पत्ति **'धृ'** धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- **धारण करना**।
- धर्मशास्त्र का सीधा संबंध वैधानिक प्रशासन से नहीं, बल्कि दुविधा वाले समय के उचित मार्ग से है।
- **प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों की छह मुख्य श्रेणियां:**
  1. श्रुतियाँ
  2. स्मृतियाँ
  3. इतिहास
  4. पुराण
  5. आगम
  6. दर्शन
  - ✓ धर्मशास्त्र भारतीय चिंतन का महत्वपूर्ण अंग है।
  - ✓ धर्मशास्त्र संबंधी संपूर्ण ज्ञान, मनुष्य के कल्याण के लिए ब्रह्मा ने मनु को दिया था।
  - ✓ धर्मशास्त्र में धर्म को राज्य से प्राथमिक माना गया है।
  - ✓ हिंदू समाज के लिए परिवार क़ानून का आधार है।
- **राज्य उत्पत्ति**
  - ✓ अठारह मुख्य स्मृतियाँ या धर्मशास्त्र हैं।
  - ✓ सबसे महत्वपूर्ण हैं **मनु, याज्ञवल्क्य** और **पाराशर**।
  - ✓ अन्य पंद्रह विष्णु, दक्ष, संवत, व्यास, हरिता, सत्वपा, वशिष्ठ, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवल, शंख-लिखित, उशना, अत्रि और शौनक हैं।
  - ✓ श्रुति की रचना वैदिक संस्कृत में हुई है और स्मृतियाँ लौकिक संस्कृत में।
  - ✓ **मनु** जाति का सबसे बड़ा और सबसे पुराना कानून-दाता है।
  - ✓ **मानव धर्म शास्त्र** में राज्य की उत्पत्ति के **दैवीय सिद्धांत** का वर्णन है।
  - ✓ मनु के अनुसार, संसार में राज्य के न होने पर बलवानों के डर से प्रजाओं में व्याप्त असुरक्षा के कारण संपूर्ण संसार की रक्षा के लिए ईश्वर ने राजा की सृष्टि की।
  - ✓ राजा कोई ईश्वर नहीं, इंद्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा व कुबेर के रूप में है।
  - ✓ राजा का प्रभाव अखंड है।
  - ✓ दैवी-शक्ति का ही प्रतिनिधि है।
- **संस्कृत में लिखे गए धर्मशास्त्र का साहित्य तीन वर्गों में विभक्त है:**
  1. सूत्र
  2. स्मृति - मनुस्मृति
  3. निबंध और वृत्ति
  - ✓ निबंध और वृत्ति विधि-सलाहकारों के लिए बनाए गए न्याय से संबंधित कार्य हैं।
  - ✓ सूत्रों तथा स्मृतियों के बीच सामंजस्य की दक्षता को प्रदर्शित करते हैं।
  - ✓ निबंधों में सबसे प्रसिद्ध **मिताक्षरा** है, जिसे चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ के दरबार में **विज्ञानेश्वर** ने संकलित किया था।

Toppersnotes Unleash the topper in you

## धर्मशास्त्र में दंडनीति

- मनु ने धर्म के **10 लक्षण** बताए हैं: धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, शौच, शुद्धता, इंद्रियनिग्रह, विवेकशीलता, विद्या, सत्य, वाच्य व अक्रोध।
- मनुष्य के बुरे व्यवहार का दमन करने हेतु दंडनीति की आवश्यकता हुई।
- दंड का प्रयोग सामाजिक होना चाहिए।
- दंड का निर्माण ईश्वर ने स्वयं किया है।
- दंड का उद्देश्य धर्म की रक्षा है।
- **मनु के चार प्रकार के दंड:** वाक् दंड, धिग्दंड, अर्थ-दंड, भौतिक दंड।

## राज्य का सप्तांग सिद्धांत

- राज्य के 7 तत्व/अंग हैं:

| | | |
|---|---|---|
| 1. स्वामी या राजा | 4. राष्ट्र | 7. मित्र |
| 2. मंत्री या अमात्य | 5. कोष | |
| 3. पुर या दुर्ग | 6. दंड | |

- किसी भी अंग को नकारा नहीं जा सकता।
- मनु के अनुसार, ये सभी तत्व परस्पर निर्भर हैं।
- मनु ने एक **कल्याणकारी राज्य** का समर्थन किया।
- अर्थव्यवस्था पर राज्य के नियंत्रण की भी बात की, जिससे संपत्ति का प्रयोग राज्य के हित में हो सके।

## धर्मशास्त्र के सामाजिक विचार

- धर्मशास्त्र में तत्कालीन **वर्ण व्यवस्था** का समर्थन किया गया।
- राजा का मूल उद्देश्य वर्ण व्यवस्था को बनाए रखना था।
- राजा से अपेक्षा की गई कि वह प्रत्येक वर्ण के सदस्य द्वारा उसके निर्धारित कर्तव्यों के पालन को सुनिश्चित करे।
- वर्ण संकरता से समाज की रक्षा करना राजा का कर्तव्य था।
- प्राचीन समाज में कर्तव्य निर्धारित करने हेतु **आश्रम व्यवस्था** का निर्माण भी किया गया।
- यह व्यक्ति के सामूहिक व्यवहार को समन्वित करने में सहायक थी।
- आश्रम व्यवस्था द्वारा व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण पर नियंत्रण किया जाता है।

## 4 प्रकार के आश्रम की व्यवस्था

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम:** विद्या अर्जन करना व ब्रह्मचर्य का पालन करना (25 वर्ष तक)।
2. **गृहस्थ आश्रम:** परिवार का पालन पोषण करना (25 से 50 वर्ष तक)।
3. **वानप्रस्थ आश्रम:** घर में रहते हुए स्वयं को सांसारिक कार्यों से पृथक करना (50 से 75 वर्ष तक)।
4. **संन्यास आश्रम:** वन में जाकर तपस्या करना या ईश्वर का जप करना (75 से 100 वर्ष तक)।

- ✓ व्यक्ति का उद्देश्य **मोक्ष की प्राप्ति** थी, चाहे वह राजा हो या सामान्य व्यक्ति।
- ✓ राजा अपने राजधर्म का निर्वाह करता है, उसे भी मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- ✓ धर्म के अनुकूल आचरण पर बल दिया गया।

Toppersnotes Unleash the topper in you

**मनु ने धर्म के 5 स्त्रोत बताए:**

1. वेद
2. स्मृति
3. सज्जनों का आचरण
4. अंतःकरण
5. राजाज्ञा

- **धर्मशास्त्र व विदेश नीति**
  - ✓ मनु ने विदेश नीति के सैद्धांतिक पक्षों में **मंडल सिद्धांत, षड्गुण्य नीति** व **उपायों** को सम्मिलित किया है।
  - ✓ **मंडल सिद्धांत** अंतर्राज्य संबंधों के सुचारू संचालन के लिए राज्यों के वर्गीकरण पर बल देता है।
  - ✓ यह राष्ट्रों के मध्य शक्ति संतुलन का व्यावहारिक स्वरूप माना जा सकता है।
  - ✓ **विजिगीषु राज्य** को राष्ट्रमंडल का केंद्र माना गया है।
- **राष्ट्रमंडल में 4 प्रकार के राज्य:**
  1. मित्र
  2. शत्रु
  3. मध्यम
  4. उदासीन
- **राज्य द्वारा दूसरे राज्य के प्रति अपनाई जाने वाली धर्मशास्त्र की 6 नीतियां:**
  1. संधि
  2. विग्रह
  3. यान
  4. आसन
  5. द्वैधीभाव
  6. संश्रय
- **दूसरे राज्य को अपने पक्ष में करने हेतु 4 उपाय:**
  1. साम
  2. दाम
  3. दंड
  4. भेद
  - ✓ विदेश नीति के संचालन में **दूत व्यवस्था** व **गुप्तचर व्यवस्था** है।
  - ✓ अनुरक्त, चतुर, तीव्र स्मरण शक्ति युक्त, देश व काल के अनुरूप निर्भय व वाक्पटु दूत को मनु ने श्रेष्ठ दूत के रूप में स्वीकारा है।

**मनु के 5 प्रकार के गुप्तचर:**

1. कापटिक
2. तापस
3. उदास्थित (संन्यास धर्म से पतित)
4. गृहपति
5. व्यापारी

- **कर-व्यवस्था संबंधी नियम**
  - ✓ मनु ने राजा द्वारा उचित मात्रा में कोष संचय की आवश्यकता पर बल दिया है।
- **धर्मशास्त्र में करारोपण संबंधी नियम:**
  1. राजा द्वारा प्रजा से न्यायपूर्ण तरीके से और कर के लिए नियुक्त अधिकारी के माध्यम से वार्षिक कर प्राप्त किया जाना चाहिए।
  2. व्यापारियों से खरीद, बिक्री, मार्गव्यय, लाभ आदि पर विचार-विमर्श के माध्यम से ही कर की दर निर्धारित करनी चाहिए।
  3. राजा को कर के रूप में पशु, स्वर्ण का पचासवां भाग व धान्य का छठा, आठवां व बारहवां भाग ग्रहण करना चाहिए।
  4. वृक्ष, मांस, शहद, घी, गंध, औषधि, फूल, फल, पत्ता, शाक, घास, मिट्टी से निर्मित बर्तन व पत्थर से बनी वस्तु का छठा भाग कर के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए।
  5. राजा द्वारा आपातकाल में भी वेदपाठी ब्राह्मणों से कर नहीं लिया जाना चाहिए।
  6. राज्य के कारीगर, बढ़ई, लोहार आदि अतिनिर्धन व्यक्तियों पर राज्य द्वारा किसी प्रकार का कर-भार नहीं डाला जाना चाहिए। इसके स्थान पर राजा को उनसे एक दिन का अतिरिक्त कार्य लेना चाहिए।
  7. अधिक लाभ के लालच में प्रजा पर किसी भी परिस्थिति में कर का अधिक भार नहीं डाला जाना चाहिए।

- **आलोचना**
  - ✓ मनु द्वारा समाज का वर्णों में विभाजन, तार्किक व उचित प्रतीत नहीं होता।
  - ✓ मनु ने राजा को ईश्वर से भी सर्वोच्च सत्ता के रूप में चित्रित किया।
  - ✓ राजा, निरंकुश व अधिनायकवादी प्रतीत होता है।
  - ✓ किसी भी प्रकार के प्रतिबंध नहीं हैं।
  - ✓ मनु द्वारा वर्णित राज्य की दैवीय उत्पत्ति का सिद्धांत तार्किक प्रतीत नहीं होता।
  - ✓ मनु ने व्यक्तियों के कर्तव्य व धर्म पर बल दिया है, स्वतंत्रता व अधिकारों पर नहीं।

- **आधुनिक धर्मशास्त्र**
  - ✓ **भारत रत्न पांडुरंग वामन काणे** ने 'धर्मशास्त्र' पर 1906 ई. से कार्य किया।
  - ✓ पाँच भागों में प्रकाशित बड़े आकार के 6500 पृष्ठों का यह ग्रंथ भारतीय धर्मशास्त्र का विश्वकोश है।
  - ✓ ईस्वी पूर्व 600 से लेकर 1800 ई. तक की भारत की विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियों का प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।
  - ✓ हिन्दू विधि और आचार-विचार संबंधी उनका कुल प्रकाशित साहित्य 20,000 पृष्ठों से अधिक का है।
  - ✓ परंपरागत विज्ञान को उपयोग में लाकर प्राचीन ग्रंथों, सिद्धांतों, वाक्यों या ऋचाओं को बताना है।
  - ✓ पूजा-पाठ करने वाले पुरोहित वर्ग के विशिष्ट समर्थन ने उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में सदियों से धर्मशास्त्र के कार्यान्वयन को वैध बना दिया।

- **निष्कर्ष**
  - ✓ मनु द्वारा व्यापक दृष्टिकोण की उपेक्षा की गई है।
  - ✓ मनु के अनुसार, राजा धर्म के नियंत्रण में तथा उसके अधीन होगा।
  - ✓ वह निरंकुश नहीं हो सकता।
  - ✓ राजा ईश्वर का अंश है, व आदर्श पुरुष है।
  - ✓ वर्ण व्यवस्था भी जन्म पर आधारित न होकर कर्म पर आधारित है।
  - ✓ धर्मशास्त्र की व्याख्या व्यापक आधार पर की जानी चाहिए न कि आंशिक।

## एम. एन. राय

- पश्चिमी बंगाल में जन्मे क्रांतिकारी विचारक व मानवतावाद के प्रबल समर्थक।
- M.N. राय मैक्सिको व भारत दोनों देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के संस्थापक थे।
- राजनीतिक रूप से गुप्त गतिविधियां कीं ("डॉक्टर महमूद" नाम से)।
- कानपुर षड्यंत्र का केस चला।
- रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की।
- 1921 में ... के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।
- 1931 में जेल गये, 1936 में रिहाई।

## एम.एन. रॉय की रचनाएँ

- India in Transition (संक्रमणकाल में भारत) - 1922 - इसमें भारत की तत्कालीन स्थिति का मार्क्सवादी दृष्टिकोण से अध्ययन एवं विश्लेषण किया है।

- India's Problems and their Solutions - 1922
- One year of Non-Cooperation from Ahmedabad to Gaya - 1923
- The future of Indian Politics - 1926
- Revolution and Counter Revolution in China - 1930
- Materialism: An outline of the history of scientific thought - 1940
- Scientific Politics (वैज्ञानिक राजनीति) - 1942
- The Problems of Freedom (स्वतंत्रता की समस्या) - 1945
- New Humanism - A Manifesto (नव मानववाद का घोषणा पत्र) - 1947
- Reason, Romanticism and Revolution (तर्क, कल्पनावाद व क्रांति) - इसके दो वॉल्यूम आये - 1948 व 1952 में।
- The Russian Revolution - 1949
- Politics, Power and Parties
- Constitution of Free India
- Radical Humanism
- Beyond Communism

## समाचार पत्र

**(i) Independent India:** 1937 में राय ने यह साप्ताहिक पत्र शुरू किया।

**(ii) Redical Humanist:** 1949 में नाम बदलकर Redical Humanist कर दिया।

## राय के जीवन के 3 चरण

1. **प्रथम चरण - क्रांतिकारी राष्ट्रवादी (1901 से 1915 तक):** 'रोमांचकारी क्रांतिकारी'। युगान्तर व अनुशीलन समिति के सदस्य।
2. **दूसरा चरण - परम्परागत मार्क्सवादी (1916-1948):**
   - ✓ 1916 में राय सैन फ्रांसिस्को (USA) पहुंचे, गुप्त नाम रखा (नरेन्द्र नाथ से M.N. राय किया)। क्रांतिकारी मार्ग छोड़ा।
   - ✓ **मैक्सिकन सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी** - 1917 (स्थापना), 1919 में नाम बदला "मैक्सिकन कम्युनिस्ट पार्टी"।
   - ✓ 1925 में भारत में **"कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया"** की स्थापना की।
   - ✓ 1920 में राय **"कॉमिटर्न"** के सदस्य बने।
   - ✓ 1857 के विद्रोह को **"सामंती विद्रोह"** कहा।
   - ✓ 1931 में नेहरू के आग्रह पर कांग्रेस के करांची अधिवेशन में भाग लिया।
   - ✓ 1936 में कांग्रेस से जुड़े।
   - ✓ 1939 में कांग्रेस के अन्दर ही **"League of Radical Congressmen"** की स्थापना की।
   - ✓ 1940 में राय कांग्रेस अध्यक्ष पद का चुनाव हारे।

- ✓ 1940 में कांग्रेस छोड़ी, **"Radical Democratic Party"** की 1940 में स्थापना की। यह एक राजनीतिक दल था। संगठित लोकतंत्र के सिद्धांतों का प्रसार। वैज्ञानिक राजनीति का नया मार्ग अपनाया, इस राजनीति को राय ने "20वीं सदी का जेकोबियनवाद" कहते थे।
- ✓ 1948 में यह पार्टी भंग कर दी।

3. **तीसरा चरण - नव मानववादी (1948 से ...):**

## M.N. राय के राजनीतिक विचार

1. **रूसी क्रांति की व्याख्या (पुस्तक, Russian Revolution में):** यह अधूरी क्रांति थी।
2. **बौद्ध धर्म को क्रांतिकारी मानते थे:** क्योंकि इसने ब्राह्मण वर्ग की विलासिता, शोषण का विरोध किया। राय, जाति व्यवस्था में वर्गभेद को छिपा हुआ मानते थे।
3. **फासीवाद:** यह समाजवाद के विरुद्ध क्रांति है।
4. **मार्क्सवाद की व्याख्या की:**
   - (i) द्वंद्वात्मक पद्धति की आलोचना की।
   - (ii) उन्होंने इतिहास की आर्थिक व्याख्या से असहमति जताई (आर्थिक के साथ-साथ मानसिक व सामाजिक क्रिया भी इसमें शामिल थे)।
   - (iii) वर्ग संघर्ष से संतुष्ट नहीं।
5. **गांधीवाद व भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया:**
   - ✓ कांग्रेस को "भारतीय फासीवाद का नवजात प्रतिनिधि" बताया।
   - ✓ गांधी को "राजनीतिक धर्म संघ का पोप" बताया।
   - ✓ राय: "गांधीवादी अहिंसा देश के पूंजीवादी शोषण को छिपाने का एक प्रच्छन्न बौद्धिक साधन है।"
6. **राय:** राष्ट्रवाद की पराजय, भारतीय स्वतंत्रता की शर्त है।

## नव मानववाद व M.N. राय

- ➢ 1947 से 1954 के मध्य नव मानववाद की खोज।
- ➢ **अन्य नाम:** उग्र मानववाद, आमूल परिवर्तनवादी मानववाद, वैज्ञानिक मानववाद।
- ➢ **मूल सार:** नव मानववाद का मनुष्य की स्वतंत्रता है जो उसकी सृजनात्मक शक्तियों के प्रयोग में निहित है।
- ➢ **नव मानववाद के 3 केन्द्रीय तत्व (मानव स्वभाव के ३ स्थायी तत्व):**
  - (i) विवेकवाद
  - (ii) नैतिकता
  - (iii) स्वतंत्रता

## नव मानववाद का राजनीतिक स्वरूप

- ➢ संसदीय लोकतंत्र की आलोचना (राय ने इसे "विनम्र तानाशाही" कहा)।
- ➢ दलविहीन लोकतंत्र का समर्थन।
- ➢ प्रत्यक्ष लोकतंत्र का समर्थन।
- ➢ मूल अधिकारों की व्यवस्था।
- ➢ संगठित लोकतंत्र की स्थापना।

- लोकतंत्र का आधार - जन समितियां।
- राज्य ऐतिहासिक विकास का परिणाम है (वर्ग सामंजस्य होगा, वर्ग संघर्ष नहीं)।
- समानता को आदर्श मानते हुए 'सहकारी अर्थतंत्र' का समर्थन किया।
- व्यक्तिवादी दृष्टिकोण अपनाया।
- नव मानववाद विश्व राज्य का समर्थन, राष्ट्रवाद से मुक्त विश्व बंधुत्व।
- राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना के लिए शिक्षा, वैचारिक परिवर्तन व सहमति आधार तत्व होंगे।
- विचारधाराओं से मुक्ति का समर्थन।

**राय-लेनिन बहस**

| लेनिन | राय |
|---|---|
| भारत में कम्युनिस्टों को कांग्रेस व गांधी का समर्थन करना चाहिए। | समर्थन की जरूरत नहीं, क्रांति स्वयं कर लेंगे। |

# रवीन्द्रनाथ टैगोर

## जीवन परिचय

- **जन्म:** 7 मई 1861 को कलकत्ता।
- इसके दादा द्वारकानाथ व पिता देवेंद्रनाथ ब्रह्म समाज के अग्रणी थे।
- वे प्रसिद्ध कवि, लेखक, संगीतकार, चित्रकार, नाटककार, शिक्षाशास्त्री, देशभक्त, आध्यात्मिक मानववादी व संश्लेषणात्मक अंतरराष्ट्रीयवादी थे।
- टैगोर की शिक्षा निजी शिक्षकों द्वारा घर पर हुई थी।
- टैगोर ने 1905 के बंग-भंग आंदोलन में भाग लिया।
- 1919 में जलियांवाला हत्याकांड के बाद 27 मई 1919 को विरोधस्वरूप **'नाइटहुड'** की उपाधि लौटा दी। यह उपाधि जॉर्ज पंचम ने 1915 में दी थी।
- 1921 में टैगोर ने शांतिनिकेतन में **'विश्व भारती'** नामक शिक्षण संस्थान की स्थापना की। 1951 में 'विश्व भारती' को विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया।
- वर्तमान में 'विश्व भारती' केंद्रीय विश्वविद्यालय है, जिसके कुलाधिपति भारतीय राष्ट्रपति के बजाय प्रधानमंत्री होते हैं।
- जवाहरलाल नेहरू, टैगोर को अपना बौद्धिक गुरु मानते हैं।
- टैगोर को **गुरुदेव** महात्मा गांधी ने तथा गांधी को **महात्मा** का नाम टैगोर ने दिया।
- रविंद्र नाथ टैगोर ने भारत के साथ-साथ बांग्लादेश का भी राष्ट्रीय गान **'आमार सोनार बांग्ला'** की रचना की।
- **नव मार्क्सवादी विद्वान जार्ज ल्यूकॉच** ने टैगोर की आलोचना की तथा कहा कि "रविंद्र नाथ यूरोपीय पूंजीपतियों के प्रतिनिधि हैं। वह ऐसे कलम घसीट हैं, जिन के चरित्र 'पेल स्टीरियोटाइप्स' यानी घिसे-पिटे ढंग से धुंधले हैं।"

## रचनाएं

1. **गीतांजलि (1910):** इसमें उनका ईश्वर के प्रति समर्पण मिलता है। इस काव्य रचना के लिए 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला था।
2. **गोरा (1910):** यह उपन्यास है।
3. **जन गण मन (1911)**
4. **घर और बाहर (1916) (The Home and the World):** इसमें स्वदेशी आंदोलन की पृष्ठभूमि में जीवन का गहन अर्थ वर्णित है।

5. The Spirit of Japan (1916)
6. Stray Birds (1916)
7. Nationalism (1917)
8. Sadhna- The Realization of life (1920)
9. Creative Unity (1922)
10. The Religion of Man (1931)

## <u>टैगोर के राजनीतिक चिंतन का दार्शनिक आधार - रहस्यमूलक प्रकृति-शिवाद्वैतवाद</u>

- रविंद्रनाथ टैगोर मांडूक्य उपनिषद के **'सत्यम शिवम और अद्वैतम'** की धारणा के अनुयायी थे। वे एकेश्वरवादी थे।
- उन्हें अपने पिता तथा ब्रह्म समाज से एकेश्वरवादी आस्था विरासत में मिली थी।
- कुछ अंशों में वे सौंदर्यात्मक अखंडात्मक एकत्ववादी थे और उन्हें परमात्मा की उच्चतम सृजनशीलता में विश्वास था।
- उसके मत में परमात्मा 'प्रेम की पूर्णता' है। उन्होंने परमात्मा को परम पुरुष माना है।
- उन्होंने एक शाश्वत परम आध्यात्मिक सत्ता की सर्वोच्चता को स्वीकार किया।
- टैगोर पृथ्वी पर देवी प्रेम के संदेशवाहक थे। गीतांजलि में उन्होंने ईश्वरीय प्रेम की व्यापकता का गान किया है।
- दांते की भांति टैगोर का भी विश्वास है, कि "पाप, दुष्कर्म और अपराध इसलिए होते हैं, कि हम ईश्वरीय प्रेम के रहस्य को पहचानने में भूल करते हैं।"
- रविंद्रनाथ ने कभी-कभी ईश्वर को संपूर्ण विश्व का सृजनहार माना है, किंतु साथ ही साथ उन्हें नैतिक पुरुष के रूप में अपनी आत्मा की सत्ता में भी विश्वास है।
- अपनी पुस्तक The Religion of Man में टैगोर लिखते हैं कि "परमात्मा समग्र वस्तुओं में व्याप्त है, वहीं मानव विश्व का ईश्वर है।"
- **अल्बर्ट श्वाइटजर** ने अपनी पुस्तक 'Indian Thought and its Development' में लिखा है कि "टैगोर एकत्ववाद और द्वैतवाद के बीच विचरण करते हैं, मानों दोनों के बीच कोई खाई न हो।"
- पेनेटियस तथा सिसरो की भांति रविंद्रनाथ का विश्वास था कि ब्रह्मांड की प्रक्रिया दैवी सत्ता से व्याप्त है। विश्व परमात्मा की लीला है। सरसराती हुई पत्तियां, वेगवती सरिताएं, तारादीप्त रात्रि और मध्याह्न का झुलसाने वाला ताप सब ईश्वर की विद्यमानता को प्रकट करते हैं।
- रविंद्र सार्वभौम सामंजस्य के कवि थे। उनका दैवी सामंजस्य में विश्वास था।
- **अल्बर्ट श्वाइटजर** का कथन है कि 'टैगोर का वस्तुओं में आत्मा' का सिद्धांत उपनिषदों की शिक्षाओं से नहीं मिलता है, अपितु उस पर आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान का प्रभाव है।
- दयानंद तथा गांधी की भांति टैगोर का भी विश्वास था कि विश्व में नैतिक शासन के सर्वव्यापी ब्रह्मांडीय नियम हैं। इसलिए संसार की तुच्छ वस्तु अथवा प्राणी को चोट पहुंचाना ईश्वर की कल्याणकारी अनुकंपा के विरुद्ध अपराध है।
- टैगोर पूंजीवाद व मार्क्सवाद दोनों के आलोचक थे, क्योंकि ये आध्यात्म व नैतिकता के बजाय भौतिकवाद, हिंसा तथा सामाजिक संघर्ष को बढ़ावा देते हैं। पाश्चात्य विचार प्रक्रिया प्रकृति से सहयोग, सामंजस्य व प्रेम करने के बजाय उस पर विजय प्राप्त करना चाहती है।
- प्रकृतिवादी होने के साथ-साथ देकार्ते, स्पिनोजा व लाइबनिज की तरह 'बुद्धिवाद' के प्रति आस्थावान थे।

## टैगोर का आध्यात्मिक मानववाद

- विवेकानंद की भांति टैगोर भी आध्यात्मिक मानववादी थे, क्योंकि वे प्रेम, साहचर्य तथा सहयोग के संदेशवाहक थे।
- टैगोर ने अपनी पुस्तक 'The Religion of Man' में रज्जब व रैदास को मानव धर्म के आदर्श प्रवर्तक माना है।
- टैगोर पुनर्जागरण काल के मानववादियों की भांति ईश्वर में विश्वास करते हैं। टैगोर को महायान संप्रदाय की धर्मकाय धारणा में आध्यात्मिक मानववाद का बीज उपलब्ध हुआ था। धर्मकाय सिद्धांत के अनुसार बुद्ध का व्यक्तित्व असीम ज्ञान तथा करुणामूलक प्रेम का मूर्त रूप है।
- टैगोर ने Stray Birds में लिखा है कि "ईश्वर मनुष्यों के हाथों से अपने ही पुष्पों को भेंट में वापस पाने की प्रतीक्षा करता है।"
- टैगोर ने Stray Birds में लिखा है कि "ईश्वर मनुष्य के दीपकों को अपने तारों से अधिक प्यार करता है।"
- कभी-कभी कहा जाता है कि रविंद्र नाथ 'अनुभवातीत मानववाद' के प्रवर्तक हैं। अपनी पुस्तक Religion of Man में उन्होंने लिखा है कि "मनुष्य के असीम व्यक्तित्व में विश्व समाविष्ट है।"
- रवीन्द्रनाथ सार्वभौम मानववाद के संदेशवाहक थे। वह अनंत सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने The Religion of Man में लिखा है कि “मनुष्य का बहुकोशिकायुक्त शरीर नाशवान है, किंतु बहुव्यक्तित्वपूर्ण मानवता अमर है।"
- इस तरह मनुष्य के व्यक्तित्व के संबंध में टैगोर की धारणा आध्यात्मिक है।
- टैगोर का कहना है कि सरल ग्रामीण जानता है कि वास्तविक स्वतंत्रता क्या है। वास्तविक स्वतंत्रता आत्मा के एकाकीपन से स्वतंत्रता तथा वस्तुओं के एकाकीपन से स्वतंत्रता है।
- टैगोर का व्यक्तित्व संबंधित सिद्धांत व्यक्तिगत प्राणी को बहुत ऊंचा उठा देता है। टैगोर ने Fruit Gathering में लिखा है कि "मुझे अनेक के जुए के नीचे अपना हृदय कभी नहीं झुकाना चाहिए।”

## इतिहास की सामाजिक व्याख्या

- टैगोर के अनुसार मनुष्य सामाजिक, संवेदनशील तथा कल्पनाशील प्राणी है, न कि यांत्रिक वस्तु अथवा राजनीतिक प्राणी।
- कॉम्टे, दुर्खाइम तथा लारेत्स वान स्टाइन की भांति टैगोर ने भी समाज को ही प्राथमिकता दी है। उनका कहना था कि राजनीति, समाज का केवल एक विशेषीकृत तथा व्यवसायिक पक्ष है।
- इस तरह टैगोर समाज व राज्य की वैध सत्ता मानते हैं।
- उनका मानना है कि प्राचीन भारत में राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों को एक दूसरे से पृथक रखा गया। घर तथा आश्रम मनुष्य की शक्तियों के संगठन में दो मुख्य केंद्र थे।
- उन्होंने स्वदेशी समाज में लिखा कि "हमारे देश में राजा था, जो अपेक्षाकृत स्वतंत्र हुआ करता था और नागरिक दायित्व का भार जनता पर था।"
- टैगोर को प्राचीन भारत के निम्नलिखित आदर्शों की स्थापना से ही देश का कल्याण दिखाई देता है: सरल जीवन, सरल तथा शुद्ध दृष्टि, आध्यात्मिक अनन्त के आदेशों का अनुगमन।
- टैगोर ने सामाजिक एकता और सुदृढ़ता पर बल दिया।

## पाश्चात्य सभ्यता का वर्णन

- टैगोर ने भारत की आध्यात्मिक विरासत के महत्व को स्वीकार किया है तथा पश्चिमी के अंधानुकरण में निहित विराष्ट्रीयकरण की प्रवृत्तियों का विरोध किया है।
- टैगोर ने ऐतिहासिक प्रगति के लिए नैतिक नियम का समर्थन किया है। पश्चिम राष्ट्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति जो संदेह की प्रवृत्ति बढ़ रही है, उस पर उन्हें बड़ा दुख था। इसलिए प्रथम विश्वयुद्ध को वे दंडात्मक युद्ध कहा करते थे।
- इनके मत में यूरोपीय सभ्यता ने आंतरिक व बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा के लिए 'राज्य की सत्ता' को सुदृढ़ किया।

- अपने आरंभिक दिनों में वे पश्चिम तथा ईसाइयत से प्रभावित हुए थे।
- प्रारंभिक जीवन में टैगोर ने लिखा था कि "यूरोप का दीपक अभी भी जल रहा है, हमें चाहिए कि अपना पुराना बुझा हुआ दीपक उसकी ज्योति से जला लें और काल के मार्ग पर चलना प्रारंभ कर दें।"
- इसके विपरीत पश्चिमी मानव समाज की असीम साम्राज्यवादी उग्रता और हिंसात्मक क्रूरता का टैगोर ने विरोध किया है।
- अपनी 80वीं जन्मगांठ पर भाषण में उन्होंने कहा कि "एक दिन मैंने अंग्रेजों को यौवन की शक्ति से पूर्ण, जरूरतमंदों की सहायता करने के लिए सदैव उद्यत राष्ट्र के रूप में देखा था, किंतु आज मैं देख रहा हूं कि वे समय से पहले ही वृद्ध हो चुके हैं।"

## सृजनात्मक स्वतंत्रता की संकल्पना

- टैगोर ने व्यक्ति की सृजनात्मक व सकारात्मक स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया है।
- उनके मत में वास्तविक स्वतंत्रता पूर्ण जागरण व पूर्ण स्व-अभिव्यक्ति का रूप है।
- मनुष्य प्रकृति के सौंदर्य को पहचानकर उसका आनंद लेते हुए ही अपनी स्वतंत्रता का उपयोग कर सकता है, उसका अंधाधुंध उपयोग करके नहीं।
- सकारात्मक स्वतंत्रता का आधार सृजनशील चेतना, सामंजस्य तथा नैतिकता होती है।
- टैगोर ने अपनी रचना **'साधना'** में कानून व स्वतंत्रता की समस्या का विस्तृत विवेचन करते हुए व्यक्ति के अस्तित्व के दो रूप बताये हैं:
    1. **भौतिक अस्तित्व:** यह प्रकृति का अंश है। यह भौतिक जगत के नियमों में बंधा है। इसमें व्यक्ति एक समुदाय के अंश के रूप में जीने को बाध्य होता है। यह बंधन का स्रोत है।
    2. **आध्यात्मिक अस्तित्व:** यह दिव्य सत्ता का अंश है। यह दिव्य व आध्यात्मिक प्रेरणा पर अवलंबित होता है। व्यक्ति इसमें स्वाधीन जीवन जीता है, बाह्य शक्तियां उसे दबा नहीं सकती हैं। यही वास्तविक स्वतंत्रता का स्रोत है।
- मनुष्य अपनी सकारात्मक स्वतंत्रता पृथक-पृथक व्यक्तियों के रूप में प्राप्त नहीं करते बल्कि समाज के परस्पर आश्रित अंगों के रूप में प्राप्त करते हैं।
- **टैगोर:** "समाज का निर्माण मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति के लिए नहीं हुआ है, बल्कि वह उसके सृजनात्मक आनंद की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है।"
- टैगोर **ने पूर्ण स्वतंत्रता के साक्षात्कार की चार अवस्थाएं बतायी हैं:**
    1. व्यक्तित्व की पूर्णता
    2. व्यक्ति से ऊपर उठकर समाज से एकात्म्य
    3. समाज से ऊपर उठकर विश्व के साथ एकात्म्य
    4. विश्व से परे अंत में विलीन होना।
- टैगोर स्वतंत्रता को 'राजनीतिक स्वतंत्रता' तक सीमित करने के विरोधी थे। उनका सुप्रसिद्ध उद्घोष था "हमें आज के दिन भी यह नहीं भूलना चाहिए कि वे लोग जिन्हें राजनीतिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी है, वे सच्चे रूप में स्वतंत्र नहीं हैं, वे सिर्फ शक्तिशाली हैं।"

## जाति प्रथा पर विचार

- उनके मत में भारत में जाति का विचार समष्टि का विचार है। यदि हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलें जो इस समष्टि के विचार के प्रभाव में है, तो वह एक शुद्ध व्यक्ति नहीं है।
- जाति का विचार सृजनात्मक नहीं है, यह केवल संस्थात्मक है।
- जाति व्यक्ति के निषेधात्मक पक्ष अर्थात उसकी पृथकता को महत्व देता है।

- टैगोर ने अपनी **'सत्यकाम जाबाल'** कविता में वंशानुगत अधिकारों के विरुद्ध उपदेश दिया तथा इस बात का समर्थन किया कि समाज के निम्नतम वर्गों को शिक्षा की समान सुविधाएं दी जानी चाहिए।
- उनके मत में जाति प्रथा वंशानुक्रम के नियम को अतिशय महत्व देती है, और उत्परिवर्तन (Mutation) तथा सामाजिक तरलता के नियम की अवहेलना करती है।
- इस तरह उन्होंने जाति प्रथा के उन्मूलन का समर्थन किया।
- जब 1932 में **रैम्जे मैकडोनाल्ड** ने सांप्रदायिक निर्णय की घोषणा की तो टैगोर ने देशवासियों को सलाह दी कि वे उसकी उपेक्षा करें और अपनी सारी शक्तियों को विवेक शून्य सांप्रदायिकता और वर्गगत भेदभाव का उन्मूलन करने में केंद्रित कर दें।

## अधिकारों का सिद्धांत

- रविंद्र नाथ टैगोर ने **The Call of Truth** पुस्तक में लिखा कि "मनुष्य को अपने अधिकारों के संबंध में भीख नहीं मांगनी है, उसे चाहिए कि वह अपने लिए उनका स्वयं सृजन करे।"
- उनके विचार में अधिकार किसी व्यक्ति की निजी संपत्ति नहीं हैं, वे सामाजिक कल्याण की वृद्धि में निष्काम योगदान देने से उत्पन्न होते हैं।
- विवेकानंद की भांति रविंद्र नाथ ने इस पर बल दिया कि अधिकारों की प्राप्ति के लिए व्यक्ति तथा समूह दोनों को ही शक्ति का अर्जन करना चाहिए।

## राष्ट्रवाद की समालोचना

- रविंद्रनाथ को मनुष्य के आध्यात्मिक साहचर्य में विश्वास था। उन्होंने 'मानव जाति के महान संघ' की कल्पना की थी। इसलिए वे राष्ट्रीय राज्य के आदेशों का पालन करने के लिए तैयार नहीं थे।
- उनके मत में राष्ट्रवाद पृथकता का पोषण करता है और आक्रामक उग्रता विश्व की सभ्यता के लिए खतरा है।
- राष्ट्रवाद अलगाव, संकीर्णता व अहंकार का पोषण करता है तथा उग्र राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद व युद्धों को बढ़ावा देता है।
- उन्होंने राष्ट्रवाद की तुलना **'हाइड्रोलिक प्रेस'** से की है, जिसका अवैयक्तिक होने के कारण पूर्ण प्रभावी होता है।
- राष्ट्रवाद आधुनिक पूंजीवादी साम्राज्यवादी राज्यों का उद्घोष है।
- टैगोर ने राष्ट्र को देवता मानकर पूजने का विरोध किया है तथा राष्ट्रवाद को संगठित सामुदायिकता और यांत्रिक लोलुपता बताया है, जो मनुष्य की सृजनात्मक व आध्यात्मिक स्वतंत्रता पर कुठाराघात करती है।
- राष्ट्रवाद के कारण टैगोर ने पाश्चात्य सभ्यता को मनुष्य के लिए सबसे घातक बताया है।
- उन्होंने अपनी कृति **Creative Unity (1925)** के अंतर्गत लिखा है कि "विभिन्न राष्ट्र, शक्ति के संघ हैं।"

## संश्लेषणात्मक सार्वभौमिकवाद की संकल्पना

- संश्लेषणात्मक सार्वभौमिकवाद की संकल्पना संकीर्ण व उग्र राष्ट्रवाद के बजाय अंतरराष्ट्रीयवाद, मानववाद व वसुधैव कुटुंबकम को बढ़ावा देती है।

## अंतरराष्ट्रीयवाद

- रविंद्रनाथ अंतरराष्ट्रीयवादी थे। जब विश्व में राष्ट्रीय अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष चल रहा था, उस समय उन्होंने राष्ट्रों की पारस्परिक मैत्री व एकता का समर्थन किया।
- ये अंतरराष्ट्रीयवादी थे पर अरविंदो की भांति मानव जाति की यांत्रिक एकता के समर्थक नहीं थे। वे सद्भावना, राष्ट्रीय मैत्री, भ्रातृत्व व जातियों तथा संस्कृतियों के हार्दिक मेल-मिलाप को स्थापित करना चाहते थे।
- अपनी पुस्तक **Nationalism** में टैगोर ने लिखा है कि "मैत्री का आदर्श जापानी संस्कृति का मूल है।"

## इटालियन फासीवाद पर विचार

- 1926 में रविंद्र नाथ टैगोर इटली चले गये।
- इटली में उन्होंने उदार, प्रत्ययवादी, नव-हेगलवादी दार्शनिक **क्रोचे** से भेंट की।
- उन पर **मुसोलिनी** के कार्यकलाप का प्रभाव पड़ा। उन्होंने मुसोलिनी तथा उनके उत्साहपूर्ण आतिथ्य की सराहना की, किंतु उन्होंने फासीवाद के राजनीतिक तथा आर्थिक दर्शन को न तो स्वीकार किया और न ही कभी प्रशंसा की।

## संपत्ति विषयक विचार

- रविंद्रनाथ ने संपत्ति के विषय में समाविष्टवादी सिद्धांत को कभी अंगीकार नहीं किया।
- वे संपत्ति के केंद्रीयकरण के विरोधी थे।
- फिर भी हेगेल तथा ग्रीन की भांति टैगोर ने स्वीकार किया कि "संपत्ति मानव व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का माध्यम है।"
- टैगोर चाहते थे कि संपत्ति मनुष्य में अंतर्निहित सार्वभौम अहं की अभिव्यक्ति बने न कि हमारी लोलुपतापूर्ण संग्रहवृत्ति की। अतः उन्होंने मनोवैज्ञानिक सौंदर्यात्मक आधार पर निजी संपत्ति का समर्थन किया है।
- उन्होंने राज्य पर अत्याधिक निर्भर होने का विरोध किया है।

## टैगोर एवं महात्मा गांधी

- रविंद्रनाथ टैगोर व मोहनदास करमचंद गांधी दोनों एक दूसरे का आदर व सम्मान करते थे, आपसी संबंध सौहार्दपूर्ण थे, पर निम्नलिखित मुद्दों पर उनमें वैचारिक मतभेद थे:

1. **आध्यात्मिक दर्शन:**
   - ✓ टैगोर उपनिषदों व कबीर की रचनाओं में प्रतिपादित सर्वेश्वरवादी, सर्वव्यापकता में विश्वास करते थे, जबकि गांधीजी गीता व तुलसीदास द्वारा उल्लेखित आस्तिकवाद में।
2. **जीवन दृष्टिकोण:**
   - ✓ टैगोर का दृष्टिकोण सौंदर्यात्मक था। गांधी नैतिक शुद्धाचारवादी थे।
   - ✓ अंबेडकर की भांति टैगोर को भी गांधी की ओढ़ी हुई दरिद्रता पसंद नहीं थी।
3. **वर्ण व्यवस्था तथा जाति व्यवस्था:**
   - ✓ गांधीजी परंपरागत वर्णाश्रम व्यवस्था के समर्थक थे पर टैगोर का मत था कि वर्णाश्रम जाति व्यवस्था के रूप में विकृत हो जाने के कारण समाज के कार्यात्मक विभेदीकरण के लिए वैज्ञानिक पद्धति नहीं रह गयी है, बल्कि यह समाज में बहिष्कार, अस्पृश्यता व जाति आधारित भेदभाव का साधन बन गयी।
   - ✓ 1934 में बिहार में आये भूकंप को गांधीजी ने 'अस्पृश्यता के पाप' के लिए 'दिव्य दंड' कहा तो टैगोर ने कहा कि गांधी एक प्राकृतिक व वैज्ञानिक घटना का इस्तेमाल अंधविश्वास व अविवेक बढ़ाने के लिए कर रहे हैं।
   - ✓ लेकिन गांधी व टैगोर दोनों ही अस्पृश्यता के विरोधी थे।
4. **आर्थिक कार्यक्रम:**
   - ✓ टैगोर को गांधीजी का 'चरखा कार्यक्रम' पसंद नहीं था, बल्कि उन्हें सहकारी खेती जैसे रचनात्मक कार्यक्रम पसंद थे।
5. **राजनीतिक कार्यक्रम:**
   - ✓ टैगोर को गांधी के असहयोग, सविनय अवज्ञा, बहिष्कार व स्वदेशी आंदोलन पसंद नहीं थे। टैगोर को गांधीजी के इन कार्यक्रमों में संकुचित राष्ट्रवाद, परंपरागत अहंकार व अराजकतावाद दिखायी देता था।
   - ✓ जबकि गांधी का दृढ़ मत था कि "बुराई के साथ असहयोग उतना ही आवश्यक कर्तव्य है, जितना ईश्वर का सहयोग।"

Toppersnotes
Unleash the topper in you

- ✓ **गांधी:** "भारतीय राष्ट्रवाद सीमित नहीं है, यह न आक्रामक है, न विध्वंसात्मक। यह स्वास्थ्यवर्धक, धार्मिक तथा मानवीय है। भारत को मानवता के लिए मरने की इच्छा करने से पहले जीना सीखना होगा। चूहे, जो बिल्ली के दांतों के बीच स्वयं को विवश पाते हैं, अपने आरोपित त्याग के लिए कोई प्रशंसा नहीं कर पाते।"
- ✓ **गांधी के असहयोग आंदोलन के विरोधस्वरूप टैगोर ने लिखा कि:** "इस आंदोलन के पीछे सर्वनाश की एक डरावनी प्रसन्नता है, जो अपने श्रेष्ठतम रूप में सन्न्यास है एवं अपने निकृष्ट रूप में भयानक विलासोत्सव है, जिसमें मानव स्वभाव जीवन की मूलभूत वास्तविकता में विश्वास खोकर एक अर्थहीन विनाश में निष्काम प्रसन्नता प्राप्त करता है।"

## अन्य तथ्य

- टैगोर ने **The Religion of Man** में लिखा कि "गहराई में हमारे प्रत्यक्ष ज्ञान से परे शाश्वत आत्मा निवास करती है।"
- टैगोर ने **The Call of Truth** तथा **The Striving for Swaraj** में गांधीजी के असहयोग आंदोलन और खादी पर सर्वाधिक बल देने का विरोध किया है।
- **टैगोर के मानवतावाद की आधारभूत धारणाएं निम्न हैं:**
  1. मानवधर्म
  2. सत्य तथा विश्व का मानववादी निरूपण
  3. व्यक्ति की विशिष्टता पर आग्रह

# बाल गंगाधर तिलक

## जीवन परिचय

- **जन्म:** 23 जुलाई 1856 ई., महाराष्ट्र के कोंकण जिले के रत्नागिरी में हुआ।
- 1880 ई. में तिलक ने चिपलूनकर, आगरकर तथा नामजोशी के साथ मिलकर पूना में **'न्यू इंग्लिश स्कूल'** की स्थापना की।
- 1881 में तिलक ने आगरकर के साथ मिलकर दो साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ किया:
  1. मराठी भाषा में **केसरी**
  2. अंग्रेजी भाषा में **मराठा**
- 1884 में **ढक्कन एजुकेशन सोसायटी (दक्षिण शिक्षा समाज)** की स्थापना की।
- मित्र आगरकर से मतभेद होने पर तिलक ने दक्षिण शिक्षा समाज से संबंध विच्छेद कर लिया तथा केसरी व मराठा का पूरा भार अपने हाथ में लिया।
- 1885 में **फर्ग्युसन कॉलेज** खोला।
- 1889 में तिलक कांग्रेस में सम्मिलित हो गये।
- **तिलक ने कहा कि:** "कांग्रेस ने एक बड़ा गंभीर कार्य अपने हाथ में ले लिया है, जिसे आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता की भावना के साथ पूरा किया जा सकता है।"
- इस दृष्टि से तिलक ने 1893 में **गणपति उत्सव** तथा 1895 में **शिवाजी उत्सव** शुरू किया।
- 1896 में पश्चिमी भारत में भीषण अकाल पड़ा तब तिलक ने पूना की सार्वजनिक सभा के द्वारा जनता की उचित मांगों को सरकार तक पहुंचाया।
- 1897 में बम्बई में भीषण प्लेग फैला तब प्लेग कमिश्नर रैंड तथा उसके सहायकों ने प्लेग की रोकथाम के लिए दमनकारी उपाय अपनाएं तब तिलक ने अपने पत्रों में उनकी कड़ी आलोचना की।
- 22 जून 1897 को दामोदर चापेकर ने रैंड और आयर्स्ट की हत्या कर दी। तब तिलक पर युवकों को हत्या के लिए भड़काने का आरोप लगाया गया तथा 18 माह का कठोर कारावास दिया गया।

- **राजनीतिक कार्यों के लिए जेल जाने वाले पहले व्यक्ति तिलक थे।**
- तिलक ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया था।
- 1905-1908 तक तिलक ने जो कार्य किए, उससे अंग्रेज नौकरशाही थर्रा गयी थी। जून 1908 में बम्बई के तत्कालीन गवर्नर सिडनेहम ने मार्ले (तत्कालीन भारत सचिव) से कहा कि "बम्बई सरकार के सामने एक ही प्रश्न था - दक्षिण भारत में तिलक का शासन रहेगा या अंग्रेजी सरकार का।"
- 1908 में तिलक को एक बार फिर 6 वर्ष की जेल हो गयी। इस प्रकार तिलक दो बार जेल गये।
- 1908 में मुजफ्फरपुर बम कांड (जिसमें खुदीराम बोस को फांसी दी गयी थी) के दोषियों की देशभक्ति की प्रशंसा तिलक ने केसरी में की।
- सरकार ने इसलिए मुकदमा चलाकर 6 वर्ष का कारावास देकर, तिलक को निर्वासित कर **मांडले जेल (बर्मा)** में डाल दिया (1908 से 1914 तक जेल में रहे)।
- मांडले कारावास के दौरान उन्होंने दार्शनिक एवं नीतिशास्त्रात्मक ग्रंथ **'गीता रहस्य'** लिखा जो 1915 में प्रकाशित हुआ।
- 1916 में एनी बेसेंट के साथ मिलकर **होमरूल लीग** की स्थापना की।
- 1907 सूरत अधिवेशन में कांग्रेस की फूट (नरम दल-गरम दल) के बाद एनी बेसेंट के प्रयासों से 1916 में लखनऊ अधिवेशन के दौरान कांग्रेस में शामिल हुए।
- लखनऊ अधिवेशन के दौरान तिलक ने कांग्रेस व मुस्लिम लीग के लिए **लखनऊ पैक्ट 1916** करवाया तथा सुप्रसिद्ध नारा दिया **"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूंगा।"**
- 1918 में सर्वसम्मति से कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये, शिरोल केस के सिलसिले में इंग्लैंड जाने के कारण पद ग्रहण नहीं किया। तथा इंग्लैंड में लेबर पार्टी के साथ संपर्क स्थापित किया।
- 1919 में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन से लौटकर 1920 में **'लोकतांत्रिक स्वराज दल'** का गठन किया।
- 1920 में तिलक का निधन हो गया।
- तिलक 'आधुनिक भारत के हरक्यूलस तथा प्रोमेथियस' थे। वे उग्र राष्ट्रवाद के जनक थे।
- तिलक में राजनीतिक यथार्थवाद की सूझबूझ तथा विशाल 'बौद्धिक आदर्शवाद' का मिश्रण था।
- **वेलेंटाइन शिरोल** ने अपनी पुस्तक 'The Indian Unrest' में तिलक को **'भारतीय अशांति का जनक'** कहा है। तिलक ने इस संदर्भ में शिरोल के खिलाफ इंग्लैंड में मानहानि का दावा भी किया था, लेकिन केस हार गये थे।
- व्यापक जन स्वीकृति व वैधता के कारण तिलक को **'लोकमान्य'** कहा जाता है।
- **आर.सी. मजूमदार** ने अपनी पुस्तक 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास' में लिखा कि "अपने देश प्रेम तथा अथक प्रयत्नों के परिणामस्वरूप बाल गंगाधर तिलक 'लोकमान्य' कहलाए जाने लगे तथा उनकी देवता के समान पूजा होने लगी।"
- **महात्मा गांधी:** "हमारे समय में किसी भी व्यक्ति का जनता पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना तिलक का। स्वराज्य के संदेश का किसी ने इतने आग्रह से प्रचार नहीं किया जितना लोकमान्य ने।"
- **Note:** तिलक व गांधीजी के बीच ब्रिटिश प्रतिरोध के तरीके को लेकर मतभेद था। तिलक जहां निष्क्रिय प्रतिरोध के समर्थक थे, वहीं गांधी सत्याग्रह के।
- गांधीजी ने अगस्त 1921 में असहयोग आंदोलन के संचालन में आर्थिक सहयोग लेने हेतु तिलक की प्रथम पुण्यतिथि पर **'तिलक स्वराज फंड'** की स्थापना की थी।
- तिलक ने 1920 में भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का विचार दिया जो 1956 में फजल अली आयोग की रिपोर्ट के बाद संभव हुआ।

## तिलक की रचनाएं

- तिलक ने 1908 से 1914 के मांडले कारावास के दौरान **'गीता रहस्य'** तथा **'दि आर्कटिक होम ऑफ दि वेदाज'** नामक दो प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की।

1. The Orion (1893):
   - ✓ 1897 में कारावास के दौरान इस अन्वेषणात्मक ग्रंथ की रचना की।
   - ✓ The Orion ग्रंथ में ज्योतिष के माध्यम से तिलक ने यह सिद्ध किया कि ऋग्वेद के कतिपय मंत्र आज से साढ़े छः हजार वर्ष पूर्व रचे गये।
   - ✓ The Orion ग्रंथ की ब्लूमफील्ड और मैक्समूलर ने प्रशंसा की है।
2. **वैदिक क्रोनोलॉजी एंड वेदांग ज्योतिष:**
   - ✓ इस रचना में ज्योतिष द्वारा तिलक ने सिद्ध किया कि ऋग्वेद का काल ईसा से 4000 वर्ष पूर्व का था।
3. **द आर्कटिक होम इन द वेदाज (1903):**
   - ✓ इस पुस्तक में तिलक ने आर्यों का मूल निवास स्थान आर्कटिक यानी उत्तरी ध्रुव बताया है।
   - ✓ वारेन ने तिलक के उत्तरी ध्रुव सिद्धांत की प्रशंसा की है।
4. **गीता रहस्य (कर्मयोग शास्त्र) (1915):**
   - ✓ यह मूलतः मराठी भाषा में लिखी गई रचना है।
   - ✓ इसमें निवृत्ति मार्ग के स्थान पर प्रवृत्ति मार्ग व कर्मयोग पर बल दिया गया है।
   - ✓ तिलक के गीता रहस्य पर T.H. ग्रीन की पुस्तक 'Prolegomena to Ethics' का प्रभाव था।
   - ✓ इसमें पूर्वी व पश्चिमी नीतिशास्त्रीय व तत्वशास्त्रीय सिद्धांतों का समन्वय है।
   - ✓ तिलक द्वारा वर्णित कर्मयोग जीवन, नैतिकता तथा कर्म का समुचित दर्शन है।
   - ✓ इसमें उपनिषद व गीता में वर्णित अद्वैतवाद तथा कर्म सिद्धांत का सामाजिक आदर्शवाद, लोकतांत्रिक नैतिकता तथा गतिशील मानववाद जैसे आधुनिक सिद्धांतों के साथ समन्वय किया गया।

## तिलक के तत्वशास्त्रीय तथा धार्मिक विचार

- तिलक का अद्वैत दर्शन में विश्वास था।
- धार्मिक भक्ति के लिए व्यक्ति ईश्वर की धारणा को स्वीकार करते हैं।
- 1901 में कलकत्ता में हिंदू धर्म पर एक भाषण में कहा कि "वास्तविक दृष्टि से धर्म में ईश्वर तथा आत्मा के स्वरूप का ज्ञान तथा **मनुष्य** द्वारा मोक्ष की प्राप्ति के साधन सम्मिलित हैं।"
- अवतारवाद में तिलक का विश्वास था। उन्होंने कृष्ण को ईश्वर का अवतार माना है। उनकी कृति गीता रहस्य श्री कृष्ण को समर्पित है।
- तिलक ने एक भाषण में कहा कि "सनातन धर्म एक बात का द्योतक है कि हमारा धर्म उतना ही प्राचीन है, जितनी की स्वयं मानव जाति। वैदिक धर्म प्रारंभ से ही आर्य जाति का धर्म था।"
- उनके मत में धर्म राष्ट्रीयता का एक तत्व है।
- तिलक का मत है कि आधुनिक विज्ञान हिंदुओं के प्राचीन ज्ञान को प्रमाणित कर रहा है।
- तिलक के मत में हिंदू वे हैं, जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हैं। हिंदू वेदों, स्मृतियों, पुराणों के आदेशानुसार कार्य करता है।

Toppers Notes Unleash the topper in you

## तिलक का समाज सुधार संबंधी विचार

- सामाजिक सुधारों के संबंध में तिलक पर अक्सर प्रतिक्रियावादी व रुढ़ीवादी होने का आरोप लगाया जाता है।
- लेकिन सिद्धांततः तिलक समाज सुधार के विरोधी नहीं थे, किंतु वे तत्कालीन सामाजिक क्रांति के विरुद्ध थे।
- उनके मत में सामाजिक परिवर्तन एकदम से नहीं होंगे, बल्कि धीरे-धीरे व शांतिमय तरीके से होंगे। प्रगतिशील शिक्षा एवं बढ़ती जागृति इस प्रकार के परिवर्तनों का मुख्य साधन होने चाहिए।
- उनके मत में जो सुधार ऊपर से थोपे जाते हैं, दंड के भय पर आधारित होते हैं, वे यांत्रिक होते हैं, जिनसे समाज व्यवस्था के छिन्न-भिन्न होने का खतरा होता है।
- तिलक ने हिंदू राष्ट्रवाद का समर्थन किया है।
- **M.N. राय** ने अपनी पुस्तक **Indian Transition** में लिखा है कि "जब तिलक ने घोषणा की कि भारतीय राष्ट्रवाद शुद्ध ऐहिक नहीं हो सकता और उसका आधार सनातन हिंदू धर्म होना चाहिए तो 'अखंड राष्ट्रवाद' को प्रोत्साहन देने वाली प्रतिक्रियावादी शक्तियों का भंडाफोड़ हो गया।"

## तीन घटनाएं जो तिलक को समाज सुधार के संबंध में प्रतिक्रियावादी व रूढ़िवादी सिद्ध करती हैं

1. **शारदा सदन विवाद (1889):**
   - ✓ पंडिता रमाबाई ने अमेरिकन ईसाई मिशनरियों की सहायता से पहले बम्बई और फिर पूना में विधवा आश्रम 'शारदा सदन' खोला।
   - ✓ तिलक को यह पसंद नहीं था कि मिशनरियों के द्वारा लड़कियों का आश्रम खोला जाए, क्योंकि इस प्रकार के आश्रम धर्म परिवर्तन का केंद्र बन जाएगा।
   - ✓ 21 दिसंबर 1889 को 'इलस्ट्रेटेड क्रिश्चियन वीकली' में एक समाचार छपा कि शारदा सदन में रहने वाली कुछ बालिकाओं ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है।
   - ✓ तब यह विवाद और बढ़ गया तथा केसरी ने लोगों को शारदा सदन के प्रति सावधान रहने की चेतावनी दी तथा शारदा सदन को अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई संस्था कहा।
2. **चाय पार्टी की घटना (1890):**
   - ✓ 4 अक्टूबर 1890 को पूना के ईसाई मिशनरी के घर तिलक, महादेव रानाडे तथा गोखले सहित 42 व्यक्तियों ने चाय पी ली।
   - ✓ परंपरावादी हिंदुओं की नजर में यह भयंकर अपराध था।
   - ✓ इस विषय पर शंकराचार्य के धार्मिक न्यायालय में मुकदमा दायर किया गया (सरदार नाटु ने इसके विरोध में मुकदमे की पैरवी की)।
   - ✓ बाद में तिलक ने चाय पीने को गलती मानकर प्रायश्चित के रूप में माफी मांगी।
   - ✓ यह **पंच हाउस मिशन पार्टी विवाद** के नाम से जाना जाता है।
3. **सम्मति आयु अधिनियम (1891):**
   - ✓ 18 जनवरी 1891 को कलकत्ता में इंपीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में 'सम्मति आयु विधेयक' प्रस्तुत किया गया, जिसमें विवाह की आयु 10 वर्ष से 12 वर्ष करना प्रस्तावित था।
   - ✓ तिलक ने इसका विरोध किया, लेकिन विरोध के बाद भी यह विधेयक पारित हो गया।

## छुआछूत पर तिलक के विचार

- तिलक अस्पृश्यता की प्रथा के विरुद्ध थे।
- तिलक ने गणेश उत्सव के जुलूसों में नीची जातियों के लोगों को ऊंची जातियों के सदस्यों के साथ-साथ अपनी गणेश प्रतिमाएं लेकर चलने की आज्ञा दी।
- 1918 में लोनवाला जिला सम्मेलन के अवसर पर तिलक ने डिप्रेस्ड क्लास मिशन के मंच पर K.V.R. शिंदे के साथ विचार विमर्श किया।

## तिलक का राजनीतिक दर्शन

- **तिलक के राजनीतिक चिंतन के आधार:**
  - ✓ तिलक के राजनीतिक चिंतन पर उनकी प्रमुख तत्वशास्त्रीय मान्यताओं का प्रभाव है।
  - ✓ उनके राजनीतिक चिंतन में भारतीय दर्शन और आधुनिक यूरोप के राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक विचारों का समन्वय है।
  - ✓ तिलक वेदांती थे। तिलक के अद्वैतवाद में स्वतंत्रता की धारणा की सर्वोच्चता का सिद्धांत था।
  - ✓ स्वतंत्रता तिलक के मत में ईश्वरीय गुण है, व्यक्तिगत आत्मा का जीवन है।

## राष्ट्रवाद

- तिलक का राष्ट्रवाद मूलतः सांस्कृतिक व आध्यात्मिक राष्ट्रवाद था। इसी कारण तिलक स्वराज्य को मनुष्य का अधिकार ही नहीं, बल्कि धर्म भी मानते हैं।
- तिलक के राष्ट्रवाद पर पाश्चात्य राष्ट्रीय स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के सिद्धांतों का प्रभाव पड़ा था।
- 1908 में उन्होंने राजद्रोह मुकदमे के संबंध में न्यायालय में जो भाषण दिया, उसमें स्टूअर्ट मिल की परिभाषा को स्वीकार किया।
- 1919 में उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत को स्वीकार किया।
- तिलक का राष्ट्रवाद दर्शन, आत्मा की परम स्वतंत्रता के वेदांती आदर्श और मैजिनी, बर्क, मिल और पाश्चात्य धारणा का समन्वय था।
- **तिलक के राष्ट्रवाद के चार प्रमुख तत्व हैं:**
  1. स्वदेशी
  2. बहिष्कार
  3. राष्ट्रीय शिक्षा
  4. निष्क्रिय प्रतिरोध

## तिलक का कोरा हिंदूवादी राष्ट्रवाद व मुस्लिम विरोधी

- कुछ आलोचकों का मानना है कि तिलक कोरे हिंदू राष्ट्रवादी थे और मुसलमानों के विरुद्ध थे।
- **जकारिया** ने अपनी कृति Renascent India में लिखा है कि "मुस्लिम लीग भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जवाब थी और आवश्यक भी थी, क्योंकि तिलक की असहिष्णुता से पृथकत्व की जिस भावना को बल मिला था वह स्वशासन की संभावना से और अधिक तीव्र हो गई थी।"
- **रजनी पाम दत्त** ने अपनी कृति India Today में लिखा है कि "तिलक व अरविंद घोष दोनों ने राष्ट्रीय जागरण को हिंदू पुनरुत्थानवाद के साथ जोड़ दिया था, इसलिए मुस्लिम जनता राष्ट्रीय आंदोलन से अलग हो गयी।"

Unleash the topper in you